उदारवाद का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताएं

उदारवाद' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Liberalism' का हिन्दी अनुवाद है। इसकी उत्पत्ति अंग्रेजी भाषा के शब्द 'Liberty' से हुई है। इस दृष्टि से यह स्वतन्त्रता से सम्बन्धित है। इस अर्थ में उदारवाद का अर्थ है 'व्यक्ति की स्वतन्त्रता का सिद्धान्त।' 'Liberalism' शब्द लेटिन भाषा के 'Liberalis' शब्द से भी सम्बन्धित माना जाता है। इस शब्द का अर्थ भी स्वतन्त्रता से है। उदारवाद को परिभाषित करने से पहले यह जा लेना भी जरूरी है कि उदारवाद अनुदारवाद का उल्टा नहीं है, क्योंकि यह अनुदारवादी किसी भी प्रकार के परिवर्तन का तीव्र विरोध करते हैं, जबकि उदारवादी उन परिवर्तनों के समर्थक हैं जिनसे मानवीय स्वतन्त्रता का पोषण होता है। उदारवाद के बारे में यह कहना भी गलत है कि यह व्यक्तिवाद है। 19वीं सदी के अन्त तक तो उदारवाद और व्यक्तिवाद में कोई विशेष अन्तर नहीं था तथा व्यक्ति के जीवन में हस्तक्षेप न करने के सिद्धान्त को ही उदारवाद कहा जाता था, लेकिन आज व्यक्ति की बजाय समस्त समाज के कल्याण पर ही जोर देने की बात उदारवाद का प्रमुख सिद्धान्त है। इसी तरह उदारवाद और लोकतन्त्र भी समानार्थी नहीं है क्योंकि उदारवाद का मूल लक्ष्य स्वतन्त्रता है जबकि लोकतन्त्र का समानता है। सत्य तो यह है कि उदारवाद का सम्बन्ध स्वतन्त्रता से है जो बहुआयामी होता है अर्थात् जिसका सम्बन्ध जीवन के सभी क्षेत्रों से होता है। उदारवाद को परिभाषित करते हुए मैकगवर्न ने कहा है-''राजनीतिक सिद्धान्त

अनुक्रम

उदारवाद का विकास

उदारवाद की प्रमुख विशेषताएं, मान्यताएं व सिद्धान्त

समकालीन उदारवाद

उदारवाद का मूल्यांकन

षित करते हुए मैकगवर्न ने कहा है-"राजनीतिक सिद्धान्त के रूप में उदारवाद को पृथक-पृथक तत्वों का मिश्रण है। उनमें से एक लोकतन्त्र है और दूसरा व्यक्तिवाद है।"

1. **डेरिक हीटर के अनुसार-**"स्वतन्त्रता उदारवाद का सार है। स्वतन्त्रता का विचार इतना महत्वपूर्ण है कि उदारवाद की परिभाषा सामाजिक रूप में स्वतन्त्रता का संगठन करने और इसके निहितार्थों का अनुसरण करने के प्रभाव के रूप में की जा सकती है।"
2. **हेराल्ट लॉस्की के अनुसार-**"उदारवाद कुछ सिद्धान्तों का समूह मात्र नहीं बल्कि दिमाग में रहने वाली एक आदत अर्थात् चित्त प्रकृति है।"
3. **डॉ0 आशीर्वादम् के अनुसार-**"उदारवाद एक क्रमबद्ध विचारधारा न होकर किसी निर्दिष्ट युग में कुछ देशों में व्यक्त की गई विविधतापूर्ण तथा परस्पर विरोधी चिन्तन-धाराओं से युक्त ऐतिहासिक प्रवृत्ति मात्र है।"
4. **इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका के अनुसार-**"दर्शन या विचारधारा के रूप में, उदारवाद की परिभाषा प्रशासन की रीति और नीति के रूप में समाज के संगठनकारी सिद्धान्त और व्यक्ति व समुदाय के लिए जीवन-पद्धति में स्वतन्त्रता के प्रति प्रतिबद्ध विचार के रूप में की जा सकती है।"
5. **सारटोरी के अनुसार-**"उदारवाद व्यक्तिगत स्वतन्त्रता,

. **सारटोरी के अनुसार-**"उदारवाद व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, न्यायिक सुरक्षा तथा संवैधानिक राज्य का सिद्धान्त तथा व्यवहार है।"

6. **लुई वैसरमैन के अनुसार-**"उदारवाद को भावात्मक तथा वैचारिक दृष्टि से एक ऐसे आन्दोलन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति में समर्पित रहा है।"

साधारण शब्दों में उदारवाद एक ऐसा दर्शन या विचाधारा है जो सत्ता के केन्द्रीयकरण का प्रतिनिधित्व करने वाली किसी भी व्यवस्था का विरोध तथा व्यक्ति की स्वतन्त्रता का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समर्थन करती है। अपने संकीर्ण अर्थ में उदारवाद अर्थशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र जैसे विषयों तक ही सरोकार रखता है जहां पर वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन व वितरण और शासकों के चुनने व हटाने की वकालत करता है। व्यापक अर्थ में यह एक ऐसा मानसिक दृष्टिकोण है जो मानव के विभिन्न बौद्धिक, नैतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंधों के विश्लेषण एवं एकीकरण का प्रयास करता है। सामाजिक क्षेत्र में यह धर्म निरपेक्षता का समर्थन करके धार्मिक रूढ़िवाद से मानवीय स्वतन्त्रता की रक्षा करता है। आर्थिक क्षेत्र में यह मुक्त व्यापार का समर्थक है। बुर्जुआ उदारवादियों के रूप में यह राज्य को आवश्यक बुराई बताकर व्यक्तिवाद का समर्थन करता है तो समाजवादियों के रूप में यह उत्पादन और वितरण

है जहां पर वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन व वितरण और शासकों के चुनने व हटाने की वकालत करता है। व्यापक अर्थ में यह एक ऐसा मानसिक दृष्टिकोण है जो मानव के विभिन्न बौद्धिक, नैतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंधों के विश्लेषण एवं एकीकरण का प्रयास करता है। सामाजिक क्षेत्र में यह धर्म निरपेक्षता का समर्थन करके धार्मिक रूढ़िवाद से मानवीय स्वतन्त्रता की रक्षा करता है। आर्थिक क्षेत्र में यह मुक्त व्यापार का समर्थक है। बुर्जुआ उदारवादियों के रूप में यह राज्य को आवश्यक बुराई बताकर व्यक्तिवाद का समर्थन करता है तो समाजवादियों के रूप में यह उत्पादन और वितरण पर राज्य के नियन्त्रण की वकालत करता है। इस तरह उदारवाद दो विरोधी प्रवृत्तियों के बीच में फंसकर रह जाता है। राजनीतिक क्षेत्र में भी यह व्यक्ति को अधिक से अधिक छूट देने का पक्षधर है ताकि व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास हो। उदारवाद राजनीतिक क्षेत्र में संसदीय प्रजातन्त्र का समर्थक है तथा शक्तियों के पृथक्करण, कानून का शासन, न्यायिक पुनरावलोकन जैसी व्यवस्थाओं का पक्षधर है अत: उदारवाद अपने हर रूप में व्यक्ति की स्वतन्त्रता का ही पोषक है। यह जीवन के किसी भी क्षेत्र में किसी भी प्रकार के दमन का विरोधी है चाहे वह नैतिक हो या धार्मिक, सामाजिक हो या राजनीतिक, आर्थिक हो या सांस्कृतिक। अपने इस रूप में यह गतिशील दर्शन है जिसका ध्येय मानव की स्वतन्त्रता है और परिवर्तनशील परिस्थितियों में इस ध्येय की प्राप्ति के लिए अनुकूल मार्ग का अनुसरण करता है।

उदारवाद का विकास

उदारवाद की अवधारणा के बीज सुकरात व अरस्तु के चिन्तन में ही सर्वप्रथम देखने को मिलते हैं। सबसे पहले इन यूनानी चिन्तकों ने ही चिन्तन की स्वतन्त्रता और राजनीतिक स्वतन्त्रता के विचार का प्रतिपादन किया था। मध्य युग में ईसाइयत के धर्म-गुरुओं ने दासता का विरोध एवं धार्मिक स्वतन्त्रता का समर्थक करके उदारवाद के सिद्धान्तों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कुछ विचारकों का मत है कि उदारवाद का उदय पहले धार्मिक प्रभुत्व और बाद में राजनीतिक प्राधिकारवाद की शक्तियों के विरूद्ध प्रतिक्रिया के रूप में हुआ जिसने व्यक्तिवादी परम्पराओं को समाप्त करना चाहा था। इस नाते यह पहले पुनर्जागरण और धर्म सुधार आन्दोलनों में प्रकट हुआ जिनका उद्देश्य मनुष्य को धार्मिक अन्धविश्वासों की बेडियों से मुक्त कराना और उसके प्राचीन युग की जिज्ञासु भावना का संचार करना था, यह प्रभुसत्तात्मक राष्ट्र-राज्य के समर्थन में भी प्रकट हुआ। इसका यह कारण था कि आधुनिक राज्य पोप के सर्वशक्तिमान अधिकार के विरूद्ध सम्भावी चुनौतियों के रूप में उभर कर आया जो निरंकुशतन्त्र का साकार रूप बन गया था। जब राजसत्ता निरंकुशवाद के मार्ग पर अग्रसर हुई तो उदारवाद राजसत्ता के आलोचक के रूप में उभरा। इसका उदाहरण हमें आधुनिक युग के उन सभी जन-आन्दोलनों में देखने को मिलता है जो नई राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना का प्रयास थे। उदारवाद के विकास के बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि यह

...वाद के विकास के बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि यह औद्योगिकरण के कारण उत्पन्न पूंजीपति वर्ग को आर्थिक क्षेत्र में खुली प्रतिस्पर्धा करने की छूट देता है। इसी कारण लॉस्की ने कहा है कि ''मध्यकाल के अन्त में नवीन आर्थिक समाज के उदय के कारण ही उदारवार की उत्पत्ति हुई।'' पुनर्जागरण काल में यह बौद्धिकता के विकास के कारण धार्मिक अन्धविश्वासों को समाप्त करने के प्रतिनिधि के रूप में विकसित हुआ। धर्म सुधार आन्दोलनों ने व्यक्ति को ही राजनीतिक चिन्तन का केन्द्र बना दिया। चर्च की सत्ता का लोप हो गया। व्यक्ति चर्च की दासता से मुक्त हो गया और चर्च की निरंकुश सत्ता का अन्त हो गया। आधुनिक युग में यह निरंकुश सत्ता के विरूद्ध एक प्रतिक्रिया या आन्दोलन का प्रतिनिधि है जिसने व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का महत्व प्रतिपादित किया है।

लॉस्की का मानना है कि ''मध्यकाल के अन्त में नवीन आर्थिक समाज के उदय के कारण ही उदारवाद का जन्म हुआ।'' आधुनिक युग में उदारवाद के दर्शन इंग्लैण्ड में होते हैं। वाल्टेयर, लॉक, रुसो, कॉण्ट, एडम स्मिथ, मिल, जैफरसन, माण्टेस्कयू, लॉस्की, बार्कर जैसे विचारकों को उदारवाद को महत्वपूर्ण विचारक माना जाता है। इन सभी राजनीतिक दार्शनिकों का ध्येय विचार और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता तथा आर्थिक क्षेत्र में यद्भाव्यम् नीति (Laissez Faire) का समर्थन करना रहा है। इन विचारकों ने राज्य को एक आवश्यक बुराई के रूप में देखा है और व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर कम-से-कम नियन्त्रण की बात पर

उदारवाद का मूल्यांकन

यद्यपि उदारवाद एक महत्वपूर्ण विचारधारा है जो व्यक्ति की स्वतन्त्रता व लोककल्याण के आदर्श के बीच संतुलन कायम करती है। अपने समसामयिक रूप में यह स्वतन्त्रता, समानता, लोकतन्त्रीय शासन का समर्थन, लोक कल्याणकारी राज्य एवं धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण में विश्वास व्यक्त करता है, लेकिन फिर भी उदारवादी दर्शन की काफी आलोचनाएं हुई हैं-

1. कुछ आलोचकों ने समकालीन उदारवाद पर प्रथम आरोप यह लगाया कि रॉल्स जैसे विचारकों द्वारा वितरणात्मक न्याय पर नये सिरे से बल देने के कारण यह बुर्जुआ व्यवस्था का समर्थक है जिसका निहितार्थ यह है कि व्यक्ति को अधिक आर्थिक स्वतन्त्रता दी जाए। प्रो0 मिल्टन फ्राइडमैन का कहना है कि ''मुक्त मानव समाज में आर्थिक स्वतन्त्रता पर अधिक जोर दिए जाने के कारण समसामयिक उदारवाद समाजवाद से काफी दूर हो गया है।''
2. एडमण्ड बर्क का उदारवाद पर प्रमुख आरोप यह है कि यह इतिहास और परम्परा का विरोधी है। किसी भी समाज और विचारक के लिए परम्परा व इतिहास से अचानक नाता तोड़ना न तो सम्भव है और न ही उचित।
3. अनुदारवादियों का प्रमुख आरोप यह है कि उदारवाद समाज व राज्य को कृत्रिम मानता है। उदारवादियों की

8. **लोक कल्याणकारी राज्य व्यवस्था का समर्थन –**

उदारवाद के आरिम्भक काल में उदारवादी विचारक व समर्थक मानव जीवन के राज्य के हस्तक्षेप का विरोध करते थे। उनका मत था कि व्यक्ति के जीवन में राज्य का हस्तक्षेप अनुचित है व मानवीय स्वतन्त्रता पर कुठाराघात करने वाला है। राज्य के कार्यों और उद्देश्यों के प्रति उदारवादियों का दृष्टिकोण लम्बे समय तक नकारात्मक ही रहा है। लेकिन वर्तमान समय में उदारवादियों का पुराना दृष्टिकोण बदल चुका है। अब सभी उदारवादी यह बात स्वीकार करने लगे हैं कि राज्य का उद्देश्य सामान्य कल्याण की साधना करना है। राज्य का उद्देश्य या कार्य किसी व्यक्ति या वर्ग विशेष तक ही सीमित न होकर सम्पूर्ण मानव समाज के हितों के पोषक हैं। राज्य ही वह संस्था है जो परस्पर विरोधी हितों में सामंजस्य स्थापित करके सामान्य कल्याण में वृद्धि करता है। आधुनिक उदारवादी आज के समय में लोक कल्याणकारी राज्य के विचार के प्रबल समर्थक हैं। समाजवाद के विकास से इस विचार को प्रबल समर्थन मिला है। इसी कारण आज की सरकारें लोककल्याण के लिए ही कार्य करती देखी जा सकती है।

9. **राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के सिद्धान्त का समर्थन –**

उदारवाद निरंकुशतावाद के किसी भी सिद्धान्त का प्रबल विरोधी है। उदारवादियों को प्रारम्भ से ही साम्राज्यवाद का भी प्रबल विरोध किया है। उदारवाद की प्रमुख मान्यता यह है कि प्रत्येक देश का शासन उस देश के निवासियों की इच्छा से ही संचालित होना चाहिए। इससे ही व्यक्ति की स्वतन्त्रता बनी रह सकती है। अत: उदारवाद राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के अधिकार का प्रबल समर्थक है। यह स्वशासन के सिद्धान्त का ही समर्थन करता है।

10. **व्यक्ति साध्य तथा राज्य साधन –** उदारवादी विचारक व समर्थक इस बात पर जोर देते हैं कि व्यक्ति अपने हितों का निर्णायक है। मनुष्य अपने जीवन के हर कार्य में प्राकृतिक रूप से स्वतन्त्र है। इसी आधार पर यह एक साध्य है। राज्य तथा अन्य संस्थाएं उसके विकास का साधन है। आधुनिक उदारवादी विचारकों ने व्यक्ति और राज्य के बीच की खाई को कम करना शुरू कर दिया है। आधुनिक उदारवाद व्यक्ति और राज्य के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की वकालत करते हैं।

और व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर कम-से-कम नियन्त्रण की बात पर जोर दिया है। एक सिद्धान्त के रूप में उदारवाद इंग्लैण्ड की 1688 की गौरवपूर्ण क्रान्ति तथा फ्रांस की 1789 की क्रान्ति का परिणाम माना जाता है। लॉक को व्यक्तिवादी उदारवाद का पिता माना जाता है। एडम स्मिथ की पुस्तक 'राष्ट्रों की सम्पत्ति' (1776) जो अमेरिका की स्वतन्त्रता के घोषणापत्र के समय प्रकाशित हुई को आर्थिक उदारवाद की बाइबल माना जाता है। माक्र्सवादी उदारवाद का विकास बेन्थम तथा जेम्स मिल के द्वारा किया गया है। माण्टेस्कयू की रचना 'The spirit of laws' भी उदारवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। रुसो का यह कथन कि 'व्यक्ति स्वतन्त्र पैदा हुआ है, लेकिन उसके पैरों में हर जगह बेड़ियां हैं' उदारवाद के प्रति उसके आग्रह को व्यक्त करता है। लॉक की 'लोकप्रिय प्रभुसत्ता की अवधारणा' भी उदारवादी दर्शन से सरोकार रखती है। उदार आदर्शवादी विचारक टी0एच0 ग्रीन को 20वीं सदी के उदारवाद का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। बीसवीं सदी का उदारवाद अपने प्राचीन रूप से कुछ विशेषताएं समेटे हुए हैं समसामयिक या आधुनिक उदारवाद निर्बाध व्यक्तिगत स्वतन्त्रता राज्य के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण का समर्थक नहीं है। आधुनिक उदारवाद व्यक्ति की स्वतन्त्रता और राज्य के साथ उसके सम्बन्ध एक कार्यक्षेत्र के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण लिए हुए है। आधुनिक समय में उदारवाद व्यक्ति की बजाय समाज के हित को

समय में उदारवाद व्यक्ति की बजाय समाज के हित को प्राथमिकता देता है। इसी कारण आज राज्य को 'कल्याणकारी राज्य के लक्ष्य' को प्राप्त करने के लिए उदारवादी विचारक स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं, चाहे इसके लिए राज्य को मानव की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का कुछ हनन ही क्यों न करना पड़े। इस प्रकार नवीन उदारवाद का दृष्टिकोण राज्य के प्रति सकारात्मक है, नकारात्मक नहीं।